आर्य सत्य चतुष्टय का धम्मपद में वैशिष्टय

डॉ आलोक भारद्वाज,

असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग,
विद्यांत हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ।

भगवान बुद्ध मानवतावाद के सर्वश्रेष्ठ प्रवक्ता थे। उनके उपदेशों का उद्देश्य मानव को दुःखों से मुक्ति प्रदान करना था। युगों युगों से मानव को उद्वेलित करने वाले प्रश्नों का समाधान उनके उपदेशों में प्राप्त होता है। उन्होंने जीवन को, जैसा भी वह है उसी रूप में स्वीकार किया और व्यवहारिक दृष्टि से जीवन से संबंधित प्रश्नों के हल ढूंढे। सामान्य मानव के जीवन का उत्कर्ष ही उनके उपदेशों का उद्देश्य था। बुद्ध का चिंतन पाखण्ड और अंधविश्वास से रहित तर्क और बुद्धिवाद पर आधारित था।

धम्मपद भगवान बुद्ध के वचनों का संग्रह है। यह पालि साहित्य का एक अनुपम ग्रन्थ है। ब्राह्मण परम्परा में जो स्थान 'गीता' को प्राप्त है वही स्थान श्रमण परम्परा में धम्मपद को प्राप्त है। त्रिपिटकों में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। धम्मपद सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय के अंतर्गत आता है। बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का बीज रूप इस ग्रन्थ में प्राप्त होता है। धम्मपद में भगवान बुद्ध द्वारा बुद्धत्व प्राप्ति से लेकर निर्वाण प्राप्ति तक अपने शिष्यों को जो उपदेश दिये थे उनके महत्वपूर्ण अंश संकलित हैं। व्यक्तित्व निर्माण के सभी मौलिक तत्व धम्मपद की गाथाओं में गुंथे हुए हैं। धम्मपद के सम्बन्ध में भदन्त आनंद कौसल्यायन का यह कथन बिल्कुल सही है कि यदि केवल एक पुस्तक को जीवन भर साथी बनाने की कभी इच्छा हो, तो विश्व के पुस्तकालय में धम्मपद से बढ़ कर दूसरी पुस्तक मिलना कठिन है।[1]

धम्मपद के अनुसार सत्यों में चार आर्य सत्य सर्वश्रेष्ठ है।[2] ये चार आर्य सत्य बौद्ध धर्म के मूल उपादान हैं। बुद्ध के धर्म का आरम्भ दुःख की अपरिहार्यता से हुआ था। सारा बौद्ध धर्म इन्हीं आर्य सत्यों में अन्तर्भुक्त है।[3] यह बुद्ध की तपस्या का निकष है। बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार में दुःख सर्वाधिक सत्य है और मनुष्य का सबसे पहला उद्देश्य इस दुःख से स्वयं की रक्षा करना है। संयुत्त निकाय के धर्मचक्र प्रवर्तन सुत्त में चारों आर्य सत्य विवृत किये गये है।[4] भगवान बुद्ध ने आर्य सत्यों के महत्व के सम्बन्ध में महापरिनिब्बान सुत्त में कहा है– "भिक्षुओं! चारों आर्य सत्यों का बोध न होने के कारण मेरा और तुम्हारा इस संसार में आवागमन दीर्घकाल से हो रहा है। हम लोग चार आर्य सत्यों को ठीक से न देखने के कारण, आज तक चक्कर काटते फिरे, किन्तु अब हम लोगों ने उसे देख लिया, अब तृष्णा नष्ट हो गयी। दुःख का मूल कट गया, फिर जन्म लेना नहीं है[5]।

चार आर्य सत्य बुद्ध की मौलिक खोज है। मुक्ति चाहने वाले भिक्षु को इन चार आर्य सत्यों का ज्ञान आवश्यक है। धम्मपद में चारों आर्य सत्यों की व्याख्या बड़े ही सुन्दर ढंग से की गयी है। धम्मपद के अनुसार "जो बुद्ध धर्म और संघ की शरण में गया है, वह मनुष्य दुःख की उत्पत्ति, दुःख का विनाश अर्थात् निर्वाण और निर्वाण की ओर ले जाने वाला श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग, इन चार आर्य सत्यों को अपनी बुद्धि से जान लेता है। ये चार आर्य सत्य वास्तव में

क्षेमकारी शरण हैं और उत्तम शरण हैं। इस शरण में आकर व्यक्ति सब दुःखों से मुक्त हो जाता है।[6] चारों आर्य सत्यों के विषय में धम्मपद के अन्तर्गत सम्यक् रूप से विचार किया गया है।

दुःख सत्य

धम्मपद के अनुसार पाप का संचय दुःखकारी है, कठोर वचन दुःखदायी हैं, कामनायें दुःखदायी हैं, संस्कार दुःखदायी है,[7] लाभ दुःखदायी है, अधर्म दुःखदायी है और बार–बार जन्म लेना दुःखदायी है। यह समस्त संसार दुःखमय है। सभी प्राणी दुःख से दुखी है। दीघनिकाय के अनुसार "जीवन दुःखदायी है, पैदा होना दुःख है, बूढ़ा होना, रोगी होना, क्षीण होना, मरना, शोक करना, चिन्तित होना, परेशान होना दुःख है। प्रिय से वियोग और अप्रिय से संयोग दुःख है, इच्छा की पूर्ति न होना भी दुःख है।[8] संक्षेप में पाँचो उपादान स्कन्ध दुःख हैं।

धम्मपद के अनुसार प्रियों का संग न करे और न कभी अप्रियों का। प्रियों का न देखना और अप्रियों का देखना दुःखद होता है। सभी संस्कार (पदार्थ) दुःख रूप हैं। इस प्रकार प्रज्ञा से जब मनुष्य देखता है तब वह दुःखों से मुक्ति पाता है।[9] यही निर्वाण पथ है। धम्मपद के अनुसार 'जब नित्य जल रहा है तो हँसी कैसी, आनन्द कैसा? अन्धकार से घिरे तुम लोग, दीपक की खोज क्यों नहीं करते?[10] यह रूप जरा जीर्ण है, रोगों का घर है और क्षण भंगुर है। अन्ततोगत्वा मृत्यु के द्वारा यह शरीर नष्ट होना ही है।[11] वास्तव में मृत्यु की सार्वभौमिक शक्ति का कोई सामना नहीं कर साकता। अविद्या में फंसे हुए लोग दुःख को देखते हुए भी नासमझ बने हुए हैं। दुःख की सत्ता सर्वव्यापक है और मनुष्य उसके प्रभाव से किसी न किसी रूप में ग्रस्त है। दुःख सत्य है जिसकी सत्ता को नकारा नहीं जा सकता।

दुःख समुदय

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार दुःख के कारण क्या हैं, इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये बौद्धमत को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और अध्यात्म विद्या विषयक कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ा।[12] सर्वव्यापक दुःख का उदय कैसे होता है और उसका क्या कारण है? इस दुःख के कारण को दुःख समुदय के अन्तर्गत रखा गया। यदि दुःख के कारण को पहचान कर हम उसे दूर कर दें तो दुःख स्वयं ही लुप्त हो जायेगा। दुःख का कारण जीने की इच्छा है।[13] मनुष्य को जहाँ सुख और आनन्द की अनुभूति होती है, वहीं उसकी प्रवृत्ति होती है। उसकी यही प्रवृत्ति तृष्णा कहलाती है।

धम्मपद में कहा गया है तृष्णा से शोक उत्पन्न होता है। तृष्णा से जो मुक्त है उसे शोक नहीं होता फिर भय का तो प्रश्न ही नहीं उठता।[14] जन्म, राग, सुख भोगने की इच्छा, भौतिक वस्तुओं की आकांक्षा आदि ही दुःख के कारण हैं। अविद्या और कर्म दुःख के हेतु होने के कारण समुदय सत्य कहे गये हैं। धम्मपद की एक गाथा में बुद्ध कहते हैं– "अविद्या परम मल है भिक्षुओं इसे छोड़कर निर्मल बनो।[15]

धम्मपद में राग को भी दुःख का कारण बताते हुए एक स्थल पर कहा गया है कि रति के कारण शोक उत्पन्न होता है। रति के कारण भय उत्पन्न होता है। जो रति से सर्वथा मुक्त है उसे शोक नहीं होता फिर भय का तो प्रश्न ही नहीं उठता।[16] तृष्णा, कामना, स्पृहा, इच्छा आदि दुःख समुदय के अन्तर्गत समाहित हैं। तृष्णा नाना प्रकार के रागों में बाँध कर जीवन को कष्ट देती है। तृष्णा के तीन भेद बताये गये हैं– काम तृष्णा (यह नाना प्रकार के विषयों की कामना करती है), भव तृष्णा (संसार की सत्ता बनाये रखने वाली तृष्णा)[17] और विभव तृष्णा (संसार का उच्छेद करने की तृष्णा)। अविद्या, कर्म और तृष्णा संसार के कारण रूप होने के कारण पृथक–पृथक रूप

से दुःख के कारण कहे गये हैं। दुःख की उत्पत्ति के अनेक कारण हैं। बौद्ध धर्म में कारणवाद का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उस के अनुसार संसार में जो धर्म हैं वे हेतु से उत्पन्न होते हैं। एक बार बुद्ध ने आनंद से कहा– "आनंद क्या जरा–मरण सकारण हैं? यदि यह पूछा जाए तो कहना चाहिए हैं। यदि जरा–मरण का कारण पूछा जाए तो कहना चाहिए जन्म के कारण जरा मरण है।[18]

दुःख निरोध

दुःख निरोध तीसरा आर्य सत्य है। भगवान बुद्ध का विश्वास था कि दुःख का निरोध सम्भव है। सांसारिक आकांक्षाओं का त्याग और अवरोध ही दुःख निरोध के अन्तर्गत गृहीत किया गया है। दुःख निरोध के विषय में धम्मपद में कहा गया है, 'जिस प्रकार जड़ के दृढ और स्थिर होने पर कटा हुआ वृक्ष भी फिर से बढ़ जाता है उसी प्रकार तृष्णा के संस्कारों के नष्ट न होने पर यह दुःख बार–बार वापस आ जाता है।[19] इस प्रकार धम्मपद की मान्यता है कि तृष्णा को स्रोत से पूरी तरह नष्ट करके दुःखों से मुक्ति पायी जा सकती है। सांसारिक आकांक्षाओं का त्याग और अवरोध ही दुःख निरोध के अन्तर्गत गृहीत किया गया है। जब दुःख और उसका कारण है, तब उसके कारण का निरोध कर दुःख का भी निरोध किया जा सकता है। संयुत्त निकाय के अनुसार पाँच काम गुणों में नहीं लगना उसमें आनन्द नहीं लेना, उसमें नहीं डूबे रहने से तृष्णा का क्षय होता है। यही दुःख निरोध है।[20] तथागत ने दीपक की उपमा देते हुए समझाया है कि जिस तरह तेल और बत्ती के संयोग से दीपक जलता है और उस दीपक में यदि कोई समय–समय पर तेल न डाले और बत्ती को न उकसावे, उसे ठीक न करे तो वह दीपक पहले के सभी आहार समाप्त हो जाने पर और नये न पाने पर बुझ जायेगा। उसी प्रकार बन्धन में डालने वाले कर्मों में बुराई ही बुराई देखते रहने से तृष्णा नहीं बढ़ती, फिर धीरे–धीरे से ये समस्त दुःख स्कन्ध स्वतः ही निरुद्ध हो जायेंगे।[21] धम्मपद में बुद्ध कहते हैं– "इस जनमते रहने वाली दुस्त्याज्य तृष्णा को परास्त करने वाले के समस्त दुःख इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार कमल पत्र से गिरकर जल की बूंद नष्ट हो जाती है।[22]

दुख निरोधगामिनी–प्रतिपदा

यह चतुर्थ आर्य सत्य है। प्रतिपद का अर्थ होता मार्ग। दुःख से मुक्ति प्राप्त करने के लिये किस मार्ग का अनुसरण करना चाहिये तथा तृष्णा और अज्ञानजनित मनोवृत्तियों और संस्कारों से कैसे मुक्ति प्राप्त हो सकती इसकी चर्चा इस आर्य सत्य के अन्तर्गत की गयी है। मज्झिम प्रतिपदा (मध्यम मार्ग) भी इसी का नाम है। निर्वाण की प्राप्ति इसी मार्ग द्वारा सम्भव है।[23] निर्वेद, विराग, निरोध, उपशम, अभिज्ञा, सम्बोधि और निर्वाण के लिये बुद्ध ने आठ अंगों वाला अष्टांगिक मार्ग बताया जिसे मध्यम मार्ग के नाम से भी जाना जाता है।[24] धम्मपद में बुद्ध का कथन है कि यही मार्ग दर्शन की विशुद्धि के लिये है। इस मार्ग पर चलकर तुम दुःखों का अन्त कर लोगे। दुःखों के विनाश को जानकर मैने इस मार्ग का उपदेश किया है।[25] वस्तुतः प्रत्येक साधक के लिये अष्टांगिक मार्ग का अनुवर्तन आवश्यक माना गया क्योंकि निर्वाण पद की प्राप्ति इसी के माध्यम से सम्भव थी।[26]

यद्यपि बौद्ध धर्म जीवन की दुःखभयता पर अत्यधिक बल देता है तथापि उससे बचने का उपाय भी बताता है। बुद्ध ने कहा है "मैने केवल यह सिखाया है और यही में अब भी सिखाता हूँ कि दुःख है और दुःख के नाश का उपाय भी हैं।"[27] ये चार आर्य सत्य जिनका शास्ता ने उपदेश किया था, बौद्ध धर्म के मूल आधार बने। ये आर्य सत्य पूर्णतः नैतिक जीवन की प्रक्रिया से सम्बद्ध है। दुःख अनैतिक जीवन के कारणों एवं

स्थितियों की व्याख्या करता है। चतुर्थ आर्य सत्य बताता है कि यदि दुःख सहेतुक है तो उसका भी निराकरण सम्भव है। तृतीय आर्य सत्य दुःख निरोध नैतिक साधना की फलश्रुति के रूप में निर्वाण अवस्था का सूचक है। इन चार आर्य सत्यों के ज्ञान के उपरान्त ही महात्मा बुद्ध ने भिक्षुओं के बीच यह दावा किया कि "देवों सहित मैने जान लिया। मैंने ज्ञान को देखा। मेरी मुक्ति अचल है। यह जन्म अन्तिम है। फिर अब आवागमन नहीं।"[28] हिरियन्ना के अनुसार पहले तीन आर्य सत्य बुद्ध के उपदेश के सैद्धान्तिक पक्ष को बताते हैं और चौथा सत्य उसके व्यावहारिक पक्ष को बताते हैं।[29]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौसल्यायन, भदन्त आनंद, धम्मपद की भूमिका, पृष्ठ–1
2. मज्झिम निकाय, चूलमालुक्या सुत्त, 1/426
3. मज्झिम निकाय, चूलमालुक्या सुत्त, 1/2/4
4. संयुक्त निकाय, 5/420
5. महापरिनिब्बान सुत्त, पृ. 44–45
6. धम्मपद गाथा सं. 190–192
7. धम्मपद गाथा सं.117, 133, 153, 186, 203, 248
8. दीघनिकाय, 2/305 पृ. 227 तथा बुद्धचर्या, 15/47
9. धम्मपद गाथा सं. 210, 278
10. धम्मपद गाथा सं. 146
11. धम्मपद गाथा सं. 148
12. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, खंड–1, पृ. 296
13. राधाकृष्णन, धम्मपद की भूमिका, पृ. 16
14. धम्मपद गाथा सं. 216
15. धम्मपद गाथा सं. 243
16. धम्मपद गाथा सं. 214
17. दीघनिकाय 2/308, मज्झिम निकाय 1/48–49
18. दीघनिकाय, महानिदान सुत्त, 2/2
19. धम्मपद गाथा सं. 338
20. संयुत्त निकाय, 2/7–8
21. संयुत्त निकाय, 2/86
22. धम्मपद गाथा सं. 336
23. उपाध्याय, बलदेव, बौद्ध–दर्शन–मीमासा पृ. 51
24. मज्झिम निकाय, 2/4/2
25. धम्मपद गाथा सं. 274–275
26. संयुत्त निकाय, 5/39–40
27. रीज़ डेविडस बुद्धिज्म, पृ. 159, उधृत हिरियन्ना, एम., भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ. 137
28. संयुत्त निकाय 55/2/1
29. हिरियन्ना, एम., भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ. 149

Copyright © 2013. *Dr Alok Bharadwaj*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.